PART-**1**

रोमन भूगोलवेत्ता- स्ट्रैबो (Strabo)

भाग-1

डॉ. राजेश कुमार सिंह, भूगोल

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह महाविद्यालय, सहरसा

रोमन भूगोलवेत्ता (Roman Geographers)

रोमन भूगोलवेत्ताओं ने ऐतिहासिक भुगोल, गणितीय भूगोल, प्रादेशिक भूगोल और भौतिक भूगोल के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। स्ट्रैबो (Strabo), टालमी (Tolemy), पाम्पोनियस मेला (Pomponiaus Mela), प्लिनी (Plini) आदि रोमन काल के प्रमुख भूगोलवेत्ता थे।

(1) स्ट्रैबो (Strabo)

रोमन भूगोलवेत्ताओं मे स्ट्रैबो (64 ई० पू० से 20 ई०) का अति महत्वपूर्ण स्थान है। स्ट्रैबो का जन्म काला सागर के तट से लगभग 80 किमी० दक्षिण की ओर टर्की (एशिया माइनर) के भीतरी भाग में स्थित अमासिया नगर में हुआ था जहाँ यूनानियों की संख्या

अधिक थी। 29 ई० पू० में वे रोम गये और वहाँ कई वर्षों तक रहे। उन्होंने नील नदी में साइने (आस्वान) तक, आरमीनिया से टिरहेनियन सागर (Tyrrhenian sea) तक और युगजाइन सागर से इथोपिया तक यात्राएं की थीं। उन्होंने यूनान के कोरिन्थस, एथेन्स, मेगरा, आर्गोंस आदि स्थानों की भी यात्रा किया था। स्ट्रैबो ने महत्वपूर्ण लेखन कार्य अलेक्जण्डरिया में रहने के पश्चात् किया और अपनी पुस्तक यूनानी भाषा में लिखा। स्ट्रैबो ने अपने से पूर्ववर्ती सम्पूर्ण भौगोलिक ज्ञान को संग्रहीत करके एक सामान्य ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत करने का अग्रगामी और सराहनीय कार्य किया था।

स्ट्रैबो ने ऐतिहासिक इति वृत्त (Historical Memoir) के रूप में लगभग 43 पुस्तकों को लिखा था। उन्होंने ज्ञात संसार के वर्णन को 17 खण्डों वाले भौगोलिक विश्वकोष (Geographical Encyclopedia) में संकलित किया था जिसका नाम ज्योग्राफिया (Geographia) रखा। स्ट्रैबो प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने भूगोल की चारों प्रमुख शाखाओं गणितीय, भौतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक को एक साथ समाहित करके एक सम्पूर्ण भौगोलिक ग्रंथ की कल्पना की थी। स्ट्रैबो के ग्रंथों का महत्व इसलिए भी अधिक है कि उन्होंने अपने ग्रंथों में उन विद्वानों के विचारों और कार्यों को भी उद्धृत किया है जिनकी रचनाएं नष्ट हो गयी हैं और उपलब्ध नहीं हैं। स्ट्रैबो ने ज्योग्राफिया नामक पुस्तक भूगोलवेत्ताओं

के लिए नहीं बल्कि राजनीतिज्ञों, राजनेताओं और सामान्य पाठकों के लिए लिखा था। यही कारण है कि इस ग्रंथ में प्रत्येक देश की सामान्य भौगोलिक विशेषताओं, भौतिक आकार एवं घरातलीय बनावट, प्राकृतिक उत्पादनों आदि के साथ ही वहाँ की सांस्कृतिक भिन्नताओं, शासन प्रणालियों तथा रीति-रिवाजों का भी वर्णन किया गया है। ख्ट्रैबो के ज्योग्राफिया नामक विश्वकोश की 17 खण्डों (पुस्तकों) की विषय सामग्री इस प्रकार है-

प्रथम दो खण्डों में विषय की प्रस्तावना दी गयी है जिसमें पुस्तक के लक्ष्य, उद्देश्य तथा मौलिक सिद्धान्तों की चर्चा की गयी है। इसमें लेखक ने इरेटोस्थनीज तथा अन्य पूर्ववर्ती विद्वानों के कार्यों की आलोचनात्मक समीक्षा किया है। तीसरे खण्ड में पश्चिम यूरोप, स्पेन, गाल (फ्रांस) और ब्रिटेन का भौगोलिक वर्णन है। चौथे खण्ड में गाल (फ्रांस), ब्रिटेन और आल्पस का वर्णन है । पाँचवें और छठें खण्डों में इटली और सिसली का वर्णन है। सातवें खण्ड में स्ट्रैबो ने राइन के पूर्व और डेन्यूब के उत्तर में स्थित देशों का संक्षिप्त वर्णन किया है। आठवें, नौवें और दसवें खण्डों में यूनान तथा समीपवर्ती द्वीपों का भौगोलिक वर्णन है। स्ट्रैबो की ग्यारहवीं से लेकर सोलहवीं पुस्तकों में एशिया के देशों का वर्णन है। अंतिम अर्थात् सत्रहवें खण्ड में अफ्रीका का वर्णन है और इसके लगभग दो-तिहाई भाग में मिग्र के भूगोल का वर्णन किया गया है।